Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2022, VOL- 10/71

मुक्त विश्वविद्यालयी शिक्षा में अध्यनरत वी.एड. छात्रों के जन सांख्यिकीय चरों एवं अभ्यास शिक्षण सम्बंधी समस्याओं का अध्ययन

सरोज बाला[1], Ph. D. & शशि यादव[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा–विभाग, डी०एस० कॉलेज, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

E-mail: drsaroj21@gmail.com

[2]शोधछात्रा, शिक्षक शिक्षा–विभाग, डी०एस० कॉलेज, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

E-mail: yadavshashi7285@gmail.com

Paper Received On: 22 JUNE 2022
Peer Reviewed On: 27 JUNE 2022
Published On: 28 JUNE 2022

Abstract

प्रस्तूत शोध–पत्र मुक्त विश्वविद्यालयी शिक्षा की आधुमिक अवधारणा है, जो संसद द्वारा पारित अधिनियम का एक भाग है। दूरस्थ शिक्षा समाज के सभी वर्गो को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रजातांत्रिक माध्यम से कार्य कर रही है। मुक्त विश्वविद्यालय जो दूरस्थ शिक्षा के उद्येश्य से स्थापित किये जाते हैं। ऐसे विश्वविद्यालय भारत समेंत समस्त विश्व में कार्य कर रहे हैं। इन विश्वविद्यालयों में प्रवेस तथा नामांकन की नीति खूली अथवा सिथिल रहती है। इसी के क्रम में इलहाबाद के फाफामउ में एक सार्वजनिक विश्वविद्यालय के रूप में, उत्तरप्रदेश राजर्षि मुक्त विश्ववद्यालय की स्थापना 1998 में की गई, इसके द्वारा उच्च शिक्षा का प्रचार–प्रसार का उद्येश्य निर्धारित किया गया। आबादी के एक बड़े क्षेत्र में कार्य कर रहे लागों गृहिणीयों और अन्य वयस्कों को उच्च शिक्षा से जोड़ने तथा उनके भविष्य के ज्ञानार्जन के लिए इसकी स्थापना का लक्ष्य रखा गया था। उच्च शिक्षा से वंचित लोगों के लिए यह विश्व विद्यालय कृतसंकल्पित है। इस विश्वविद्यालय में बी०एड० प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया जाता है। जिनकी विभिन्न प्रकार की समस्याएँ जैसे पाठ्यक्रम आधारित समस्या पाठ योजना निर्माण कक्षा शिक्षा संबंधित समस्याएँ एवं व्यक्तिगत अनुभव संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी पर आधारित है।

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का आधार वहाँ की शिक्षा व्यवस्था होती है। उसी के आधार पर उस देश की आर्थिक उन्नति मानव विकास एवं सर्वागिण विकास की आधार शीला तय की जाती हैं, शिक्षा के औपचारिक संस्थाओं की सिमित उपलब्धता की वजह से सर्व सुलभ शिक्षा की संरचना उन्नीसवी सदी के आरम्भ से ही शुरू कर दी गयी थी। वैसे तो विश्व में प्रथम दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत 1840 ई० में "आइजक पिटमैन" के द्वारा शुरू किया था। दूरस्थ शिक्षा को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में सर्वप्रथम रूस में 1962 ई० में स्वीकार किया गया, इसके वाद भारत में भी इसकी आवश्यकता महसूस

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की जाने लगी, भारत में सर्व प्रथम 1962 ई० में दिल्ली विश्वविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की शुरूआत की गयी।

वास्तव में दूरस्थ शिक्षा सामान्य रूप से वंचित वर्गों, कमजोर महिलाओं, सुविधाविहिन क्षेत्रों में निवास करने वाले युवा वर्ग, सरकारी कर्मचारी, कामकाजी वर्ग के लोगों में विकास उपलब्ध कराने के लिए सितम्बर 1985 ई० में इंदिरा गाँधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी (प्ळछव्न्) इग्नू की स्थापना करने का निर्णय किया गया।

इसी क्रम में केन्द्र सरकार के द्वारा केन्द्रिय राष्ट्रीय शिक्षा निति 1986 के प्रतिवेदनों को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इलाहाबाद में स्थित एक सार्वजनिक विश्वविद्यालय के रूप में 1998 ई० में इलाहावाद के फाफामऊ में स्थापित किया गया। विश्वविद्यालय अधिनियम 1999 उत्तर प्रदेश (अधिनियम संख्या 10,1999) के अन्तर्गत किया गया। इस वि०वि० को दूरस्थ शिक्षा योजना के अंतर्गत एक मुक्त विश्वविद्यालय बनाया गया। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले वंचित लोगों जो स्वतंत्र रूप से शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। उनके शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह विश्वविद्यालय अस्तीत्व में आया।

सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन विश्वविद्यालय ने वी०एड० एवं वी०एड० विशिष्ट शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रवेश करने के लिए जिला मुख्यालय इलाहावाद (वर्तमान में प्रयागराज) मऊ, आजमगढ़, वाराणसी, जौनपुर, गोरखपुर इत्यादि जिले इनका कार्य क्षेत्र है। कार्य क्षेत्र एवं छात्र संख्या की दृष्टि से यह भारत के कुछ प्रमुख विश्वविद्यालय की श्रेणी में है। कार्य क्षेत्र की दृष्टि से यह उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान युग में प्रशिक्षण गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक तत्व है। छात्र विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से उच्च शिक्षा को प्राप्त कर रहे हैं। इसमें मुक्त विश्वविद्यालय उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रहे है। इसी संदर्भ में शिक्षक शिक्षा जो एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जिसके माध्यम से सेवारत एवं वंचित प्रशिक्षु शिक्षा प्राप्त करते हैं चूकि मुक्त विवि में प्रशिक्षणों से छात्रों का सीधा सम्पर्क नहीं हो पाता है, जिस के कारण प्रशिक्षण के प्रमुख कार्यक्रमों जैसे सुक्ष्म शिक्षण, अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम, वार्षिक पाठयोजना सम्पर्क कक्षाऐं उचित मार्गदर्शन, पुस्तकालय अध्यापन वातावरण, अध्ययन केन्द्र पर्याप्त कक्षाऐं इत्यादि के लिए उचित मार्ग दर्शन एवं निर्देशन नहीं मिल पाता है।

इसलिए इसमें प्रायः कुछ प्रशिक्षण अध्ययन सामाग्री प्रवेश प्रक्रिया संबंधी वाध्यता इत्यादि के संदर्भ में अभाव बने रहने के कारण इसमें समस्याओं का जन्म होता है। अतः ऐसे प्रशिक्षण समस्याओं से ग्रसित होकर छात्र अपने मूल उद्देश्यों से दूर हो जाता है।

इस प्रकार समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिए इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता पड़ी।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या कथन :– "मुक्त विश्वविद्यालयी शिक्षा में अध्ययनरत वी०एड० छात्रों के जनसांख्यकीय चरों एवं अभ्यास शिक्षण संबंधी समस्याओं का अध्ययन"

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

1. मुक्त विश्वविद्यालय, 2. जनसांखिकी चर, 3. शिक्षक अभ्यास संबंधित समस्या

मुक्त विश्वविद्यालयी अर्थात ऐसे विश्वविद्यालय जो दूरस्थ शिक्षा के उद्येश्य से स्थापित किये जाते है इस विश्वविद्यालयों में प्रवेश–नामांकन की नीति खुली या शिथिल होती है, अर्थात विद्यार्थियों अधिकांशतः स्नातक स्तर के प्रोग्रामों में प्रवेश देने के लिए उनमें पूर्व शैक्षणिक योग्यताओं की जरूरत या बंधन नहीं लगाया जाता है। अध्ययन का मतलब विषय वस्तु की व्याख्या करना वहीं जन सांख्यिकीय का अर्थ मानव जनसंख्या का सांख्यिकीय अध्ययन है। जिसे किसी भी प्रकार की गतिशील मानव आवादी पर लागू किया जा सकता है। यह किसी खास जन समुदाय की विशेषतओं को निर्दिष्ट करता है। वही चर का अर्थ होता है'–एक कोई ऐसी चीज जिसको एक या अनेक कारणों से वदलाव किया जाता है।

करलिंगर के अनुसार– चर एक चिन्ह या (सिंवल) है जिसमें अंक अथवा मूल अंकित किया जा सके, चर संख्यात्मक या गुणात्मक भी हो सकता है। अर्थात व्यवहारिक विज्ञान में किया जाने वाला अनुसंधान में प्रयुक्त चर जिसमें प्रयोजन या परिस्थियों के अनुसार पारिवर्तन होता रहता है। जनसांख्यकीय चर डेमोग्राफी से तात्पर्य है जनसंख्या के आकार, घनत्व, वितरण एवं लिंगानुपात के विशेष संदर्भ में सांख्यकीय अध्ययन यहाँ जनसांख्यिकीय चर का अर्थ है, बी०एड० छात्रों के वातावरण संख्या लिंग के आधार पर अभ्यास शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं को उपरोक्त वर्गो में वर्गीकरण करके निरीक्षण करना।

उद्येश्य परिकल्पना

अभ्यास शिक्षण से तात्पर्य प्रशिक्षण के समय प्रशिक्षुओं द्वारा विद्यालय में किया जानेवाला निरीक्षण कार्य अभ्यास शिक्षण कार्य कहलाता है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे उ०प्र० राजर्षि टंडन मुक्त वि०वि० के 10 अध्ययन केन्द्रों पर अध्ययनरत वी०एड० छात्रों को जनसंख्या के रूप में लिया है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उ०प्र०रा० टंडन मुक्त वि०वि० के सन 2018–2020 तक नामांकित 10 अध्ययन केन्द्रों में 500 छात्रों के यादृच्छिक (त्मउकंद) विधि द्वारा चुनाव इसमें किया गया। आजमगढ़, जौनपुर, इलाहावाद और मऊजनपद के 5 अध्ययन केन्द्रों को शामिल किया गया।

शोध विधि :–प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा शोध में प्रयुक्त शोध उपकरण के रूप में उपकरण के रूप में निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सूचना प्रपत्र

व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र जब अनुसंधानकर्ता अपने शोध उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु जिस डाटा पर शोध करना होता है उसमे रेंडम डाटा पर आधारित कुछ प्रश्नो को व्यक्तिग रूप से उनके पास जाकर उस समूह का विचार प्राप्त करना व्यक्तिग सूचना प्रपत्र कहलाता है।

स्वनिर्मित प्रश्नावली रू....

जब किसी प्रकार का शोध अनुसंधान करने जा रहे और शोध से संबन्धित उपकरण उपलब्ध नही है तब अधिकतम 5 पॉइंट स्केल पर एक प्रश्नावली निर्मित किया जाता है जो उसके अनुसंधान से संबन्धित उद्देश्यों की अनुरूप प्रश्नो का जो निर्माण किया जाता है उसे स्वनिर्मित प्रशनावली कहा जाता है।

परिकल्पना

(1) मुक्त वि०वि० में अध्ययनरत बी०एड० छात्रों के वातावरण का उनकी कक्षा का अभ्यास समस्या पर प्रभाव पड़ता है।

(2) मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत वी०एड० छात्रों के वातावरण का उनके व्यक्तिगत अनुभव सम्बन्धित समस्याओं का अभ्यास पर प्रभाव पड़ता है।

(3) मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत वी०एड० छात्रों के वातावरण का उनकी पाठ योजना निर्माण सम्बधी समस्याओं का अभ्यास समस्या पर प्रभाव पड़ता हैं।

(4) मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत वी०एड० छात्रों के वातावरण का उनकी पाठ्यक्रम सम्बधी समस्याओं का अभ्यास शिक्षण पर प्रभाव पड़ता है। **परिकल्पना परिक्षण** सभी आंकड़ें प्रतिशत मे

नोट : पू°स°=पूर्ण सहमत,स=सहमत पू°अस=पूर्ण असहमत, अनि=अनिश्चित

क्रम	क्षेत्र	ग्रामीण					शहरी				
		पू.स.	स.	अनि.	अ.स.	पू.अस.	पू.स.	स.	अनि.	अ.स.	पू.अस.
1.	पाठ्यक्रम आधारित समस्या	25.67	33	21.7	14.4	5.23	20.73	40.17	18.4	14	6.7
2.	पाठ योजना निर्माण सम्बन्धी समस्या	33.2	30	11	10.5	15.3	29.5	35	10.5	15	10
3.	व्यक्तिगत अनुभव आधारित समस्या	22	27	18	19	14	28	29	15	14	14
4.	कक्षा शिक्षण सम्बन्धी समस्या	29	33	19	15	4	27	29	22	13	9

व्याख्या एवं निष्कर्ष

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से निम्न लिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

1. ग्रामीण एवं शहरी वातावरण के प्रशिक्षुओं के विचार, पाठ्यक्रम आधारित समस्या के प्रति लगभग समान पाये जाते हैं। अर्थात वातावरण का प्रभाव पाठ्यक्रम को समझने में वाधा उत्पन्न नहीं करता, इस प्रकार पाठ्यक्रम की भाषा सरल एवं स्पष्ट होती है जिससे छात्र विषय वस्तु को आसानी से समझ लेते है।
2. ग्रामीण एवं शहरी वातावरण के छात्र पाठ्योजना निर्माण सम्बन्धी समस्या के प्रति अधिक सहमति प्रकट करते हैं। अर्थात दोनों वातावरण में छात्र पाठयोजना निर्माण में असहज अनुभव करते हैं उनका मतलव है कि पाठयोजना निमार्ण का अभ्यास अल्प समय के लिए एवं

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अलग–अलग विषय के अनुसार नहीं करवाया जाता है। जिससे पाठयोजना के विभिन्न सोपान का अभ्यास पर्याप्त नहीं हो पाता इस कारण ग्रामीण एवं शहरी दोनों छात्र पाठ योजना बनाने में लगभग समान रूप से कठिनाई का अनुभव करतें है।

3. व्यक्तिगत अनुभव आधारित समस्या के प्रति भी दोनों वातावरण के छात्रों का मन्तव्य लगभग समान पाया जाता है, अर्थात वातावरण का प्रभाव व्यक्तिगत समस्याओं पर लगभग समान ही पाया।
4. कक्षा शिक्षण के दौराण उत्पन समाधान के प्रति की ग्रामीण तथा शहरी वातावरण के छात्र लगभग समान विचार प्रकट करते है अर्थात वातावरण का कक्षा शिक्षण की समस्याओं पर अलग–अलग प्रभाव नहीं पड़ता, दोनों ही लम्बी प्रशिक्षण अवधि एवं वार–वार की अनिवार्यता पर असहमति का भाव प्रकट करते हैं।

शोध का निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध के आधार पर दूरस्थ शिक्षा वी०एड० पाठ्क्रम में समयानुकुल परिर्वतन होना आवश्यक है।
2. प्रस्तुत शोध के आधार पर प्रशिक्षण को वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार बनाने में मदद मिलेगी।
3. प्रस्तुत शोध के आधार पर सम्पर्क शिक्षा कक्षाओं को अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध के आधार पर सुक्ष्म शिक्षण द्वारा छात्रों में शिक्षण कौशलों का विकास करने में सहायक होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. मुक्त एंव नियमित माध्यम के बी०एड० छात्रों की अभ्यास शिक्षण सम्बधी समस्या का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. मुक्त शिक्षा के किन्ही दो विश्वविद्यालय के छात्रों की अभ्यास शिक्षण सम्बधी समस्यओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है।
3. शिक्षा के दो केन्द्रो के बी०एड० मुक्त छात्रों की समस्यओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

एलन टेलर रोजर मिल्स : (1999) द डिस्टेन्स एंड कनवर्ससेक्सन एजुकेशन पेर्टन्स दिल्ली
वेहरा स्यपना : 1989 डिस्टेन्स एजुकेशन अमर प्रकाशन नई दिल्ली
मंजू मेहता : 1987 मिनिग वोकेशन इन्फार्मेशन प्रकाशन प्रीन्टवेल जयपुर
पाण्डेय के.पी., गौतम, गुप्ता एस.के. 1984 डिस्टेन्स ऐजुकेशन प्रगति प्रकाशन आगरा।
शिव कुमार डी जी (2017) किशोर छात्रों में संवेग समायोजन का अध्ययन परिपेक्ष्य इण्डियन जर्नल (ए पी पी) 01–603

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies